100 किलो की पुष्प माला से गूंजा स्वागत, अखंड ब्राह्मण समाज ने मुख्यमंत्री का किया भव्य अभिनंदन

धर्मशाला व मंदिर के लिए भूमि की मांग, समाज अध्यक्ष विनीत त्रिवेदी के नेतृत्व में सौंपा गया ज्ञापन

आष्टा। नगर में उस समय भव्य और श्रद्धामय माहौल बन गया जब अखंड ब्राह्मण समाज द्वारा प्रदेश के मुख्यमंत्री का ऐतिहासिक स्वागत किया गया। समाज के पदाधिकारियों एवं विप्र बंधुओं ने मुख्यमंत्री का लगभग 100 किलो की विशाल पुष्प माला पहनाकर अभिनंदन किया, जो आकर्षण का केंद्र बना रहा। इस अवसर पर समाज अध्यक्ष विनीत त्रिवेदी के नेतृत्व में बड़ी संख्या में विप्र बंधु उपस्थित रहे। स्वागत के दौरान पारंपरिक उत्साह, एकता और सामाजिक समर्पण का अद्भुत दृश्य देखने को मिला।

कार्यक्रम के दौरान अखंड ब्राह्मण समाज द्वारा मुख्यमंत्री को एक ज्ञापन भी सौंपा गया, जिसमें समाज की प्रमुख मांगों को प्रमुखता से रखा गया। ज्ञापन में आष्टा नगर में ब्राह्मण समाज के लिए धर्मशाला एवं मंदिर निर्माण हेतु भूमि आवंटन की मांग की गई। समाज के प्रतिनिधियों ने बताया कि धर्मशाला एवं मंदिर बनने से सामाजिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा मिलेगा और समाज को एक स्थायी केंद्र प्राप्त होगा। मुख्यमंत्री ने समाज के प्रतिनिधियों की बातों को गंभीरता से सुना और मांगों पर सकारात्मक विचार करने का आश्वासन दिया। इस अवसर पर समाज के कई वरिष्ठ एवं युवा कार्यकर्ता मौजूद रहे, जिनमें प्रमुख रूप से विभिन्न क्षेत्रों से आए विप्र बंधुओं की सक्रिय भागीदारी देखने को मिली। पूरे कार्यक्रम में अनुशासन, एकता और उत्साह का वातावरण बना रहा। समाज के पदाधिकारियों का कहना है कि यह केवल स्वागत कार्यक्रम नहीं, बल्कि समाज की एकजुटता और अपनी मांगों को मजबूती से रखने का एक प्रयास था। कार्यक्रम ने यह संदेश दिया कि जब समाज एकजुट होता है, तो उसकी आवाज़ शासन-प्रशासन तक प्रभावी ढंग से पहुंचती है।

अंकुरा हॉस्पिटल फॉर वुमन एंड चिल्ड्रन ने अपने उत्कृष्टता केंद्र को मजबूत किया

हैदराबाद। अंकुरा हॉस्पिटल फॉर वुमन एंड चिल्ड्रन ने आज बाल चिकित्सा देखभाल के क्षेत्र में बढ़ते बदलाव के जवाब में अपने उत्कृष्टता केंद्र (सीओई) को मजबूत करने की घोषणा की, जो बढ़ते मामलों की जटिलता और अत्यधिक विशिष्ट, समन्वित उपचार दृष्टिकोणों की आवश्यकता से चिह्नित है।

अंकुरा हॉस्पिटल्स सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) फॉर पीडियाट्रिक केयर की विशेषता इसका एकीकृत, बहु-विषयक मॉडल है, जो जटिल और उच्च जोखिम वाली स्थितियों के सटीक और त्वरित प्रबंधन के लिए विभिन्न बाल चिकित्सा विशेषज्ञताओं को एक समन्वित ढांचे के तहत एकीकृत करता है। उन्नत निदान, न्यूनतम चीर-फाड़ वाली शल्य चिकित्सा विशेषज्ञता, अत्याधुनिक लेवल 3 एनआईसीयू और पीआईसीयू अवसंरचना, पूर्ण रूप से सुसज्जित बाल चिकित्सा वार्ड और चौबीसों घंटे कार्यरत गहन देखभाल टीमों द्वारा समर्थित, सीओई शीघ्र निदान, निर्बाध सहयोग और सुसंगत उपचार योजना को सक्षम बनाता है, जिससे परिणामों में उल्लेखनीय सुधार होता है। प्रतिरक्षा विज्ञान, रुमेटोलॉजी, गैस्ट्रोएंटरोलॉजी, पल्मोनोलॉजी, न्यूरोलॉजी, सर्जरी और ऑर्थोपेडिक्स सहित दुर्लभविशेषज्ञताओं में इसकी अनूठी विशेषज्ञता, एक ही छत के नीचे अत्यधिक जटिल और बहु-प्रणाली विकारों के प्रबंधन की अनुमति देती है, जिससे अंकुरा एक अग्रणी रेफरल हब के रूप में स्थापित होता है जो विशेष बाल चिकित्सा देखभाल तक पहुंच में अंतर को पाटता है और सर्वोत्तम प्रथाओं, नवाचार और बेहतर रोगी केंद्रित परिणामों को बढ़ावा देता है। हाल के वर्षों में, चिकित्सकों ने पाया है कि बाल चिकित्सा मामलों की संख्या न केवल बढ़ रही है, बल्कि वे काफी अधिक जटिल भी होते जा रहे हैं। जन्मजात विकृतियों और नवजात जटिलताओं से लेकर विकासात्मक और प्रतिरक्षा संबंधी विकारों तक की स्थितियों के लिए अब अक्सर बहु-विषयक देखभाल की आवश्यकता होती है। कई बच्चे अक्सर कई परामर्शों के बाद, बीमारी की उन्नत अवस्था में अस्पताल में भर्ती होते हैं, जिससे शीघ्र निदान और एकीकृत नैदानिक प्रबंधन पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो गया है। इस पृष्ठभूमि में, अंकुरा ने बाल चिकित्सा देखभाल के लिए अपने सह-आयोजक केंद्र का लगातार विस्तार किया है, जिससे यह हैदराबाद और आसपास के क्षेत्रों में उन्नत बाल स्वास्थ्य देखभाल के लिए एक रेफरल केंद्र के रूप में स्थापित हो गया है। अस्पताल नेटवर्क वर्तमान में प्रतिवर्ष छह लाख से अधिक परिवारों को सेवा प्रदान करता है और अपने केंद्रों में एक लाख से अधिक नवजात गहन देखभाल मामलों का प्रबंधन करता है। इनमें से अधिकांश मामलों में विभिन्न विशेषज्ञताओं के बीच समन्वित हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है।

गांधीनगर में साहित्यकारों का महाकुंभ

जरूरतमंद को रक्तदान एवं अगला अधिवेशन इंदौर में

125 साहित्यकार सम्मानित, 9 पुस्तकों का लोकार्पण

गांधीनगर/ कोटा। समरस संस्थान साहित्य सृजन भारत के गांधीनगर, गुजरात में 11 एवं 12 अप्रैल को आयोजित 11 वें वार्षिक अधिवेशन के दूसरे दिन सामाजिक प्रकल्प के रूप पर जरूरतमंद को रक्त और अगला अधिवेशन इंदौर में आयोजित करने के प्रस्ताव पारित किए गए। प्रति वर्ष उल्लेखनीय कार्य करने वाले सदस्य को एक लाख रुपए का स्मृतिशेष पुष्पा देवी व्यास समरस साहित्य शिरोमणि एवं उत्कृष्ट समरस सेवा अलंकरण देने की घोषणा करते हुए संस्थान के संस्थापक डॉ. मुकेश कुमार स्नेहिल ने इस वर्ष का प्रथम पुरस्कार संस्थान की राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शशि जैन कोटा को उनकी उल्लेखनीय सेवाओं और योगदान के लिए प्रदान किया गया, जिसका पूरे सदन ने पुरजोर स्वागत किया। अतिथियों द्वारा गणेश जी की प्रतिमा के सम्मुख दीप प्रज्वलित, समरस गान और समरस गीत और सुशीला लोवादा के स्वागत नृत्य के साथ अधिवेशन का शुभारंभ हुआ।

अधिवेशन के अतिथि गांधीनगर की विधायक रीताबेन पटेल, निदेशक चेस ग्लोब इंडिया

डॉ. केदार सावरीकर, वरिष्ठ पत्रकार एवं पूर्व निदेशक इलाहाबाद बैंक, दिनेश दुबे, जी. के. वी. इन्फ्रास्ट्रक्चर के विजय बणजारा, चंद्रा डिजिटल स्टूडियो के सत्यनारायण शर्मा, गुजरात फाउंडेशन के अध्यक्ष नरेंद्र सिंह राजपुरोहित, एन.पी.पी.सेवा ट्रस्ट के अध्यक्ष

भूपेश प्रजापति, न्यू तृप्ति हॉस्पिटल के डॉ. सुनील कुमार जोशी ने संस्थान के साहित्यिक एवं सामाजिक सेवा कार्यों की मुक्तकंठ से सराहना की और देश के कोने-कोने से आए साहित्यकारों के महाकुंभ में 125 साहित्यकारों को संस्थान की ओर से सम्मानित किया तथा 9 पुस्तकों का लोकार्पण किया गया। संस्थान के संस्थापक एवं संयोजक डॉ. मुकेश कुमार व्यास स्नेहिल ने सभी का स्वागत कर बताया कि 18 राज्यों और तीन देशों में संस्थान की इकाइयां कार्यरत हैं जिनसे 43 हजार साहित्यकार सदस्य जुड़े हैं। साहित्य संवर्धन के साथ सामाजिक सेवा की दृष्टि से गतवर्ष भूखे को भोजन प्यासे को पानी सेवा प्रकल्प लिया गया था । उन्होंने घोषणा की कि इस वर्ष जरूरतमंद को रक्तदान सेवा प्रकल्प भी जोड़ा जायेगा। जिन समरसी सदस्यों ने प्रेम पुष्प भाग दो में अपनी रचनाएं भेजी उनको पुस्तक में सहयोग के लिए पृथक से भी सम्मानित किया गया है। संस्थान द्वारा प्रकाशित काव्य कृति प्रेम पुष्प भाग दो का अतिथियों ने लोकार्पण किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. शशि जैन ने बताया कि पुस्तक में दस्तक 125 सदस्यों की दो-दो कविताओं के साथ उनका संक्षिप्त परिचय प्रकाशित किया गया है। सुरेन्द्र शर्मा बसर की कृति चलते चलते, विजय प्रताप सिंह की कृति अंतर्द्वंद्व, अमरनाथ मूर्ति एवं राजेंद्र नाथ मूर्ति की कृति कविता संग्रह, सुधांश शेखर बख्शी की कृति यादों के साऐं, रूपाली गर्ग की कृति परत दर परत एक नारी, डॉ. शशि जैन एवं डॉ. प्रभात कुमार सिंघल की कृति साहित्य में पर्यावरण, पर्यटन और अध्यात्म, डॉ. वैदेही गौतम की कृति उन्मुक्त गगन उड़ती पतंग एवं डॉ. संगीता देव की कृति सांस्कृतिक थाती लोक मांडना कला का भव्य लोकार्पण किया गया। लेखकों एवं संपादकों ने अपनी कृतियों को संक्षिप्त जानकारी दी। इस अवसर पर आयोजित कवि सम्मेलन में 108 कवियों ने काव्यपाठ किया और अपनी कविताओं से देशभक्ति, सामाजिक समरसता, हास्य व्यंग्य के साथ-साथ रक्तदान का प्रभावी संदेश दिया। अधिवेशन के प्रथम दिन साहित्यिक भ्रमण कार्यक्रम के तहत साहित्यकारों को गांधीनगर के प्रमुख दर्शनीय स्थलों के साथ - साथ एशिया के सबसे बड़े और आधुनिक ब्लड बैंक का भ्रमण करवाया गया।

तपस्या के माध्यम से हम अपना मनुष्य जीवन को सफल कर सकते हैं।आचार्य जीतरत्न सागर सूरीश्वर महाराज

अभयदान सबसे श्रेष्ठ दान, धर्म के मर्म को समझें– मुनिश्री ज्ञानेश मुनिराज

आष्टा। श्री महावीर श्वेतांबर जैन मंदिर गंज स्थित उपाश्रय में विराजमान वाणी के जादूगर, वात्सल्य रत्नाकर आचार्य भगवंत जीतरत्न सागर सूरीश्वर महाराज एवं उनके शिष्य मुनिश्री ज्ञानेश मुनिराज ने अपने ओजस्वी प्रवचनों में धर्म के गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाते हुए कहा कि तपस्या के माध्यम से हम अपने मनुष्य जीवन को सफल बना सकते हैं।चार प्रकार के दानों में अभयदान सबसे महत्वपूर्ण है। यह वह दान है जिसमें सभी जीवों के प्रति मैत्री, करुणा और अहिंसा की भावना निहित होती है। जब व्यक्ति यह भाव रखता है कि 'संसार के सभी जीव मेरे मित्र हैं ', तभी सच्चे अर्थों में अभयदान की भावना विकसित होती है।मुनिश्री ज्ञानेश मुनिराज ने आगे कहा कि भगवान ने जो मार्ग बताया है,वह केवल उनके आत्मकल्याण के लिए नहीं, बल्कि समस्त जीवों के कल्याण के लिए है। धर्म का लाभ केवल तप करने से ही नहीं,बल्कि तप की अनुमोदना करने से भी प्राप्त होता है। इसलिए हर व्यक्ति को धर्म कार्यों में सहभागिता और समर्थन दोनों भावों से करना चाहिए।उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि धर्म के मामले में 'बनियागिरी' नहीं करना चाहिए, अर्थात धर्म को लेन-देन या स्वार्थ से नहीं जोड़ना चाहिए। धर्म का मूल भाव त्याग,समर्पण और आत्मशुद्धि है। जब तक मनुष्य संसार की आसक्ति से स्वयं को अलग नहीं करता,

तब तक सच्चे धर्म का अनुभव संभव नहीं है।

मुनिश्री ने जैन धर्म की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इसमें परमात्मा की आराधना के साथ उनके प्रत्यक्ष स्पर्श और प्रक्षाल (अभिषेक) की परंपरा भी है। भगवान की प्रतिमा से सकारात्मक ऊर्जा निकलती है, जो श्रद्धा भाव से दर्शन एवं प्रक्षाल करने वाले भक्तों को प्राप्त होती है।उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति लक्ष्मी (धन) का सदुपयोग नहीं करता, तो उसका मन मलिन हो जाता है। धर्म और सेवा में धन का उपयोग ही उसे पवित्र बनाता है। भगवान महावीर स्वामी को भावपूर्वक नमन करने वाला व्यक्ति निश्चित रूप से अपने जीवन में कल्याण की दिशा में आगे बढ़ता है।

मुनिश्री ने श्रद्धालुओं को आत्ममंथन करने की प्रेरणा देते हुए कहा कि कई बार प्रवचन सुनने के बाद भी लोगों का कल्याण नहीं होता,क्योंकि उनका मन स्थिर नहीं रहता। केवल्यज्ञान (मोक्ष) की इच्छा तो सभी करते हैं, लेकिन उस मार्ग पर चलने का साहस और अनुशासन कम ही लोग अपनाते हैं।उन्होंने भगवान के जीवन प्रसंगों का उल्लेख करते हुए बताया कि दीक्षा के समय भगवान ने अपने शरीर पर चंदन का लेप लगाया था और वे साधना में इतने लीन रहते थे कि बाहरी संसार से उनका कोई संपर्क नहीं रहता था। उनके शरीर से आने वाली चंदन की सुगंध से भी लोग प्रभावित होते थे, किंतु वे आत्मसाधना में ही तल्लीन रहते थे।

मुनिश्री ने आगे कहा कि इस जन्म में केवल्यज्ञान की प्राप्ति कठिन है, लेकिन यदि व्यक्ति सही मार्ग पर चलता है, तो भविष्य में मोक्ष का मार्ग प्रशस्त हो सकता है। 'विजय क्षेत्र' में मोक्ष मार्ग सक्रिय है, लेकिन वहां तक पहुंचने के लिए अभी से संयम, त्याग और साधना का अभ्यास करना आवश्यक है।उन्होंने कहा कि असक्ति (मोह) को त्यागना ही मोक्ष की दिशा में पहला कदम है। साथ ही, जीवन में संयम भी अत्यंत आवश्यक है।क्षमता से अधिक भोजन करना भी दुख का कारण बनता है।धर्म साधना के अंतर्गत वर्षीतप, नवपद ओली जैसी तपस्याओं का विशेष महत्व बताते हुए मुनिश्री ने कहा कि तप के दौरान आत्मिक आनंद की अनुभूति होती है, हालांकि पारणा (उपवास खोलने) के समय परिस्थितियां अनुकूल नहीं भी हो सकतीं। फिर भी, धर्म के नियमों के अनुसार तप करना ही सच्ची साधना है।

मुनिश्री ने जीवन के संबंधों को समझाते हुए 'तीन प्रकार के घर' (आत्मा, मित्र, शत्रु) और 'चार प्रकार के मित्रों' की व्याख्या की–

प्याली वाला मित्र (सिर्फ औपचारिकता तक सीमित)

थाली वाला मित्र (भोजन तक का संबंध),लाली वाला मित्र (भोग-विलास का साथी)

और कल्याण वाला मित्र (जो धर्म मार्ग पर ले जाए)।

उन्होंने कहा कि कल्याणकारी मित्र देव और गुरु के समान होते हैं, जो स्वयं भी तरते हैं और दूसरों को भी तारने की भावना रखते हैं।

अंत में मुनिश्री ने कहा कि तपस्वियों की अनुमोदना (प्रशंसा और समर्थन) करने से भी पुण्य की प्राप्ति होती है। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को धर्म के मार्ग पर चलने के साथ-साथ दूसरों को भी प्रेरित करना चाहिए। प्रवचन के दौरान बड़ी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे और सभी ने मुनिश्री के आशीर्वचन का लाभ प्राप्त किया।

'तुम बिन पापा सब कुछ है आधा-आधा सा' — 'पिता एक फरिश्ता/' काव्य गोष्ठी में उमड़ा भावनाओं का सागर

उदयपुर। नवीन फाउंडेशन द्वारा स्वर्गीय प्रभुदास मोगरी की पुण्य स्मृति में काव्य गोष्ठी 'पिता एक फरिश्ता' (सत्र द्वितीय) का भव्य एवं भावपूर्ण आयोजन किया गया। कार्यक्रम श्रीमती दयावंती मोगरी के स्नेहिल सानिध्य में गरिमामय वातावरण में संपन्न हुआ। आयोजन की संयोजक अर्चना चावला रहीं, जिन्होंने अपने पिता की स्मृति में इस कार्यक्रम को सफलतापूर्वक आयोजित किया।

कार्यक्रम में वरिष्ठ साहित्यकार आशा पाण्डेय ओझा, रश्मि शर्मा, संजय गुप्ता 'देवेश' एवं रेखा शर्मा विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। सभी अतिथियों ने अपने उद्बोधन में पिता के जीवन में महत्व को रेखांकित करते हुए ऐसे आयोजनों की आवश्यकता और प्रासंगिकता पर प्रकाश डाला। काव्य गोष्ठी का मुख्य आकर्षण काव्य पाठ रहा, जिसमें 27 कवि एवं कवित्रियों ने भाग लिया। अमित व्यास, डॉ. प्रियंका भट्ट, सुमन स्वामी, गरिमा खण्डेलवाल, अनीता भाणावत, डॉ. कामिनी व्यास रावल, पल्लवी कुमारी, स्वाति शकुंत, संगीता गुजराती, हरित जोशी, दक्षेश पानेरी, डॉ. शीतल श्रीमाली, डॉ. नीलम रमेजा, डॉ. निर्मला, डॉ. मनीष सक्सेना, मीनाक्षी पंवार, दीपा पंत, दीपिका स्वर्णकार, शाद उदयपुरी, श्याम मठपाल सहित अनेक रचनाकारों ने पिता पर आधारित अपनी भावपूर्ण रचनाएं प्रस्तुत कीं। कवियों की प्रस्तुतियों ने श्रोताओं को भाव-विह्वल कर दिया। किसी ने

पिता के मौन त्याग को शब्द दिए, तो किसी ने उनके संघर्ष, स्नेह और संरक्षण को कविता में जीवंत किया। हर रचना में पिता के प्रति गहरी श्रद्धा, प्रेम और कृतज्ञता झलकती रही। सभी रचनाकारों ने अपने-अपने पिता की स्मृतियों को साझा करते हुए स्वर्गीय प्रभुदास मोगरी को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की।

लगभग तीन घंटे तक चले इस कार्यक्रम में यह संदेश स्पष्ट रूप से उभरकर सामने आया कि परिवार में जहां मां का स्नेह अमूल्य है, वहीं पिता का त्याग, अनुशासन और संरक्षण भी उतना ही महत्वपूर्ण है। कार्यक्रम के अंत में सभी प्रतिभागियों को ऊपरना ओढ़ाकर स्मृति-पत्र प्रदान कर सम्मानित किया गया। समापन अत्यंत आत्मीय एवं भावनात्मक वातावरण में हुआ, जिसने उपस्थित सभी जनों के हृदय में पिता के प्रति गहरी संवेदनाएं और सम्मान जागृत कर दिया। यह काव्य गोष्ठी केवल एक साहित्यिक आयोजन न होकर, भावनाओं, स्मृतियों और रिश्तों की गहराई को समझने का एक सशक्त माध्यम बनकर उभरी। नवीन फाउंडेशन का यह प्रयास समाज में पारिवारिक मूल्यों और संवेदनाओं को जीवित रखने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल के रूप में सराहा जा रहा है। कार्यक्रम की सफलता ने यह भी संकेत दिया कि भविष्य में ऐसे और अधिक साहित्यिक आयोजनों की अपेक्षा की जा रही है, जहां रिश्तों की संवेदनाओं को शब्दों के माध्यम से अभिव्यक्त किया जा सके।